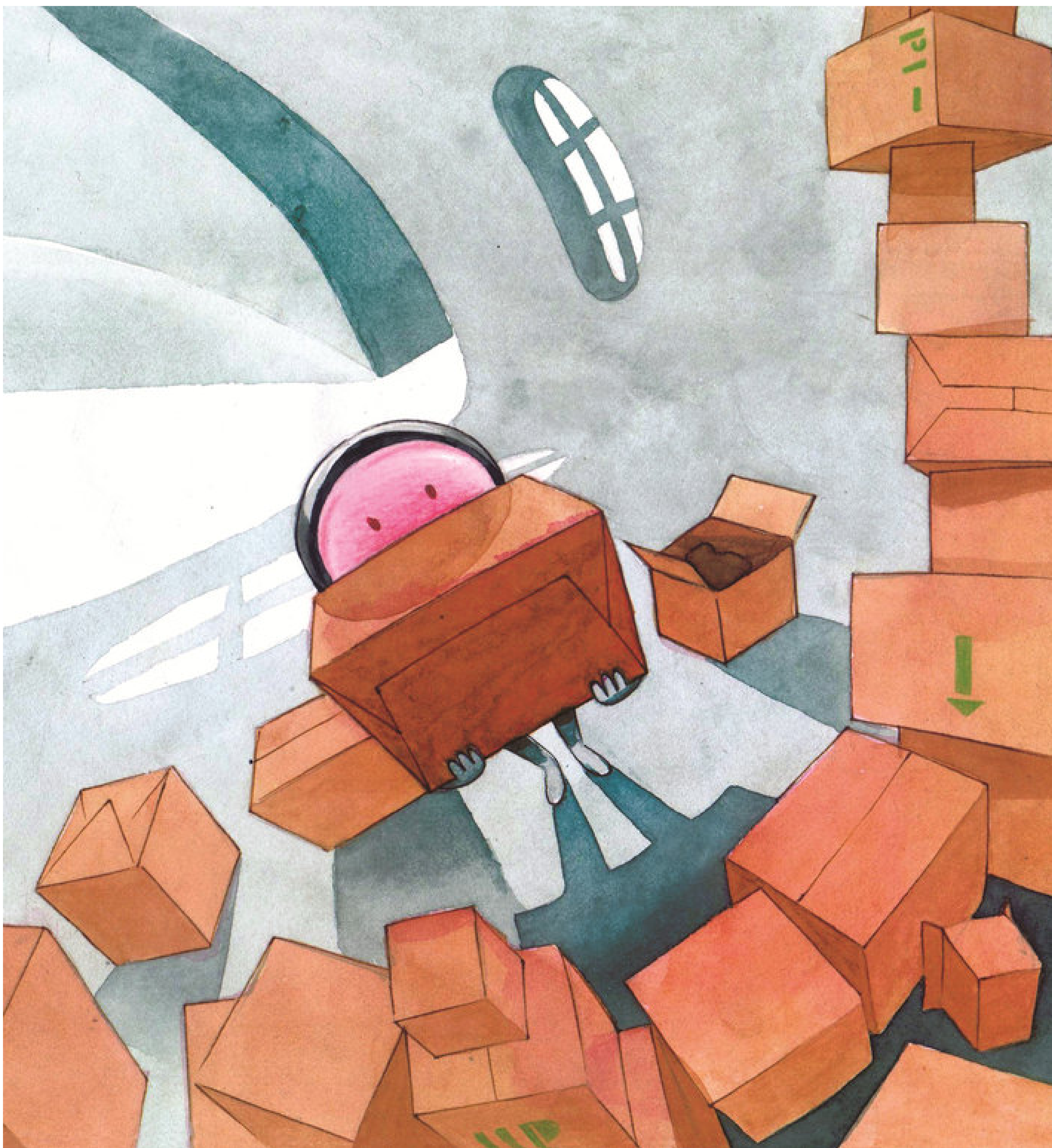


story weaver

देवी का दोस्त बॉन्डा

Author: Roopa Pai
Illustrator: Jit Chowdhury
Translator: Rishi Mathur

पठन स्तर ४



"फिर! इन्हें ठीक से एक के ऊपर एक लगाकर रखो, बॉन्डा! मैं अब दूसरी तरफ़ से आकर इन्हें गिराना चाहती हूं!"

बिना एक पल गंवाए, और बिना मुंह बिचकाए, बॉन्डा पचासवीं बार गत्ते के डिब्बों को एक के ऊपर एक रख कर उनकी मीनार जैसी बना देता है। गत्ते के डिब्बों की ऊंची सी मीनार देखने में भले ही ऐसी लगे कि किसी भी पल गिर जाएगी, लेकिन बॉन्डा ने उसे बहुत ही संतुलित ढंग से बनाया है ताकि वह अपने आप न गिरे। ऐसी मीनार इतनी सफ़ाई से कैसे बनायी जा सकती है, सिर्फ़ वही जानता है।



जब देवी दौड़ कर आती है और ख़ुशी से चिल्लाती हुई मीनार से टकराती है, और मीनार में अटे डिब्बे देवी के चारों और ढेर होते हैं तो बॉन्डा तालियां बजाते हुए ठहाके लगाता है, बिलकुल वैसे ही जैसे पहली बार मीनार गिरने पर उसने किया था।

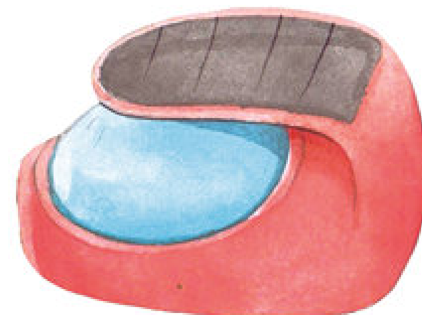
प्यारा बॉन्डा! देवी का सबसे अच्छा दोस्त। बॉन्डा से प्यारा दोस्त किसी को भी नहीं मिल सकता। ख़ास कर देवी को तो शायद बिल्कुल भी नहीं, आख़िर वह अपाहिज जो है।



नमस्कार! मैं हूं देवी, और यह साल है 2085 ईस्वी। जब देखो तब मेरे दादू यही बातें करते रहते हैं कि पिछले 70 सालों में दुनिया कितनी बदल गयी है। लोगों की भीड़ कितनी ज़्यादा बढ़ गयी है, लेकिन गनीमत है हवा पहले से कम गंदी है। गाड़ियां तो बहुत हैं, लेकिन उनमें से बहुत सारी अब बिजली या सौर ऊर्जा से चलती हैं। सड़क पर दुर्घटनाएं भी कम होती हैं, क्योंकि तमाम सारी गाड़ियां तो ख़ुद को अपने आप ही चलाती हैं- टकराने से बचने का पूरा ध्यान रखते हुए! पेड़ और जंगल अब उतने नहीं रहे हैं जितने पहले थे, लेकिन अच्छी बात यह है कि अब फिर लगाये जा रहे हैं।

मुझे बताया गया है कि सन् 2085 के बाद जो सचमुच बड़े बदलाव आये हैं, वो सब टेक्नोलॉजी की वजह से आये हैं। सन् 2016 में भी टेक्नोलॉजी थी , पर आज जैसा चमतकारी कुछ न था। टेक्नोलॉजी ने आज ज़िन्दगी को कितना आसान और हैरतअंगेज़ बना दिया है।

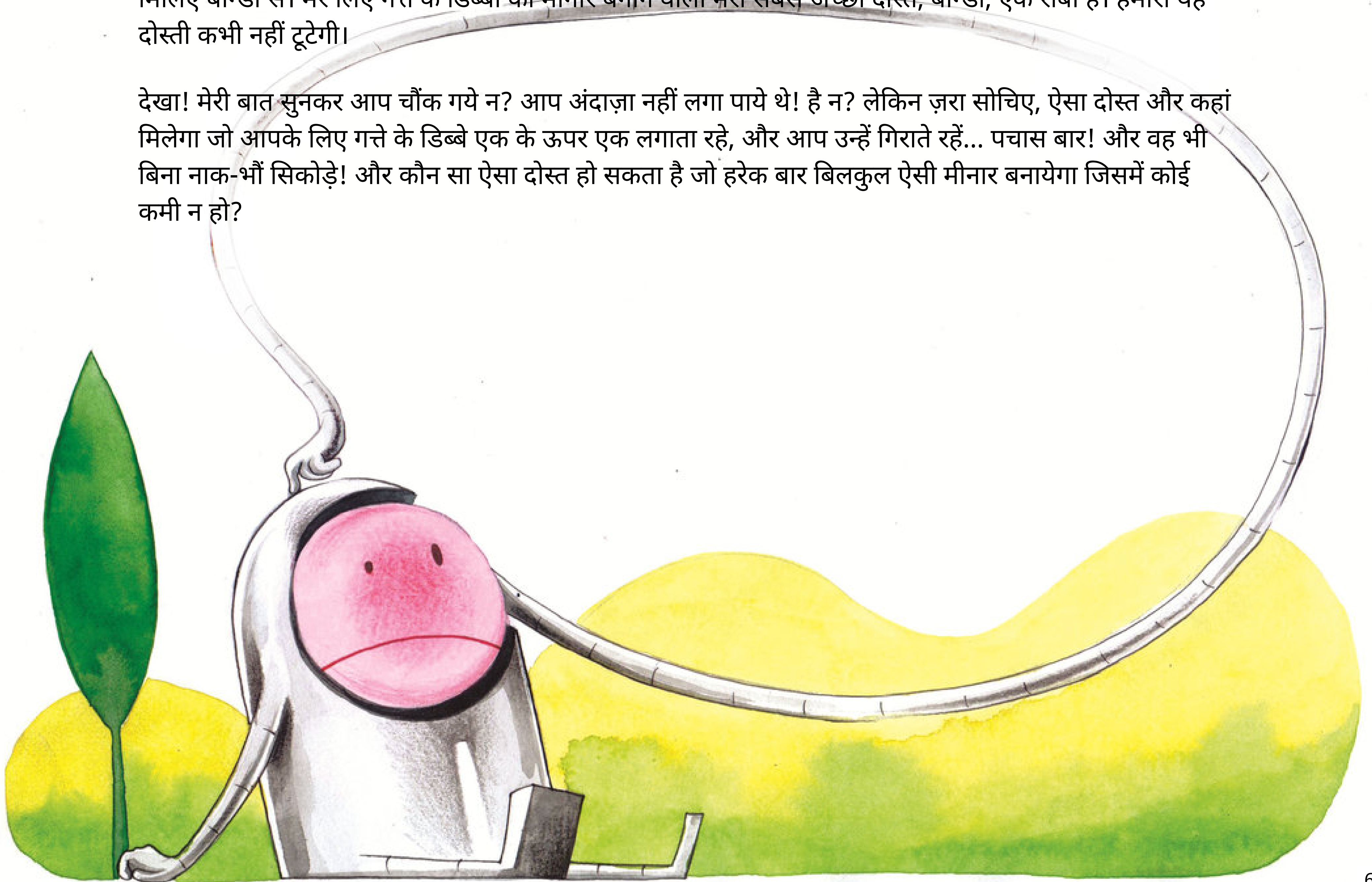
कम से कम मेरी ज़िन्दगी को तो बना ही दिया है। मेरा सबसे प्यारा दोस्त बॉन्डा टेक्नोलॉजी की ही तो देन है।



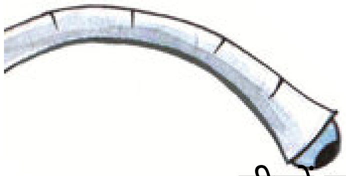


मिलिए बॉन्डा से। मेरे लिए गत्ते के डिब्बों की मीनार बनाने वाला मेरा सबसे अच्छा दोस्त, बॉन्डा, एक रोबो है। हमारी यह दोस्ती कभी नहीं टूटेगी।

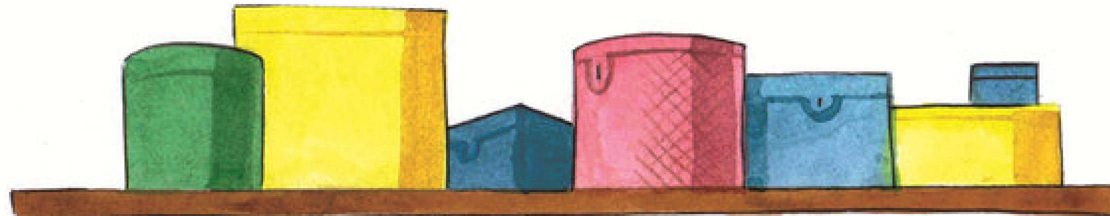
देखा! मेरी बात सुनकर आप चौंक गये न? आप अंदाज़ा नहीं लगा पाये थे! है न? लेकिन ज़रा सोचिए, ऐसा दोस्त और कहां मिलेगा जो आपके लिए गत्ते के डिब्बे एक के ऊपर एक लगाता रहे, और आप उन्हें गिराते रहें... पचास बार! और वह भी बिना नाक-भौं सिकोड़े! और कौन सा ऐसा दोस्त हो सकता है जो हरेक बार बिलकुल ऐसी मीनार बनायेगा जिसमें कोई कमी न हो?



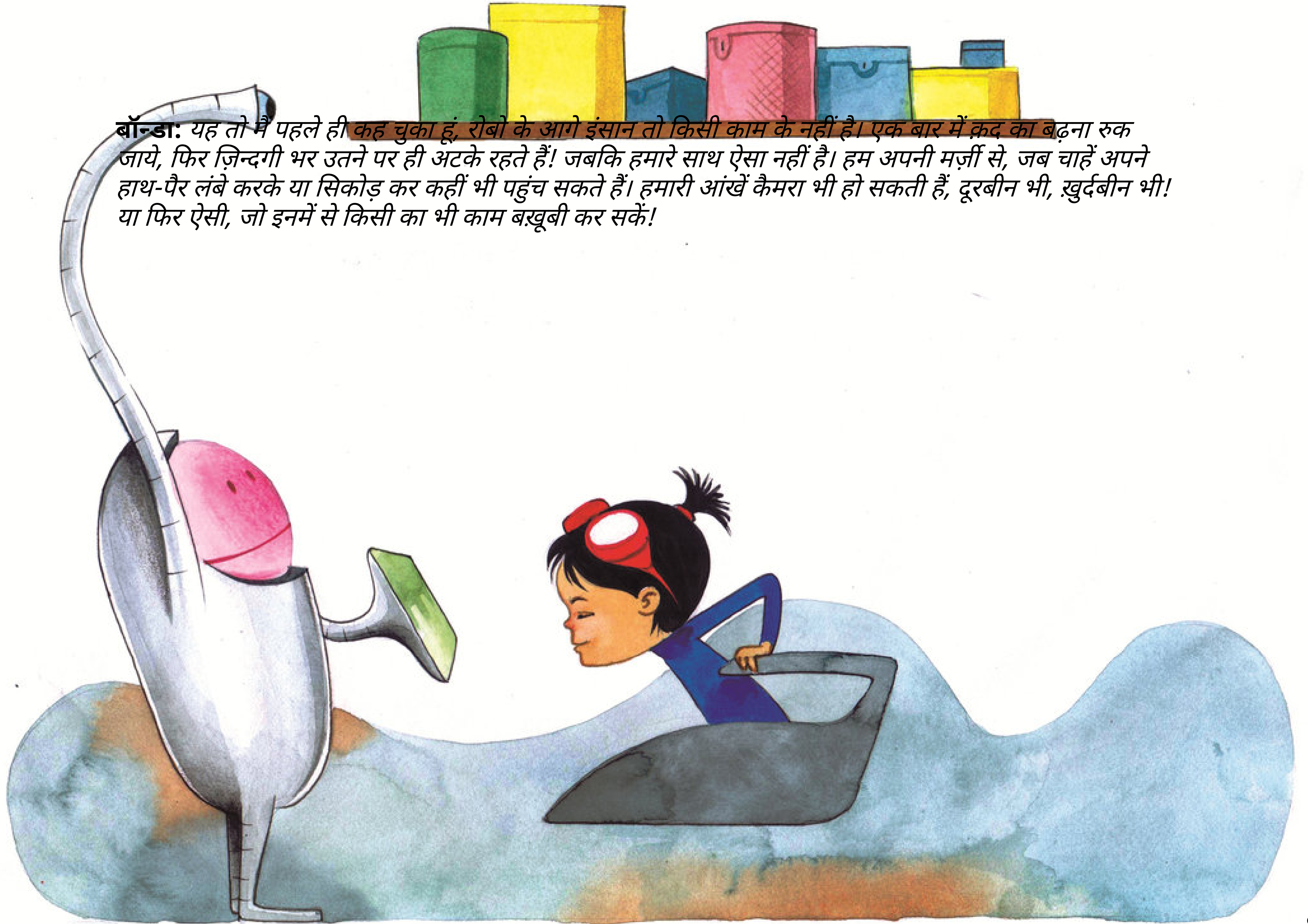
बॉन्डा: *मानता हूं मै! इंसान इतनी बारीकी से या हर बार एक जैसा काम नहीं कर सकते। और अगर उन्हें वही काम बार-बार करना पड़े तो वह चिढ़ कर कहते हैं कि वह ऊब गये, परेशान हो गये, जबकि मुझे तो इन शब्दों के मायने ही पता नहीं! फिर इंसान बीमार भी पड़ जाते हैं, और उन्हें कितनी ही बार 'टॉयलेट' जाना पड़ता है। मैं तो इस बात पर हैरान हूं कि हमसे पहले वह अपने काम कैसे किया करते थे!*



चीज़ों को एक के ऊपर एक गढ़ने के सिवा बॉन्डा और भी बहुत कुछ कर सकता है। मैं उसे और भी तमाम सारे काम करना सिखा सकती हूं, जैसे- दस मिनट में दो दर्जन गेंद तेज़ी से फेंको ताकि मैं बल्लेबाज़ी की 'प्रैक्टिस' कर सकूं, अलमारी की सबसे ऊपर वाली शेल्फ़ (जो इतनी ऊंचाई पर है कि उसके सिवा और कोई बिना सीढ़ी के वहां तक पहुंच नहीं सकता) से अपना गुप्त ख़ज़ाना ले कर आने के लिए कह सकती हूं, बाबा जिस भारी वाली मेज़ पर काम करते हैं उसे उठाने के लिए कह सकती हूं, ताकि मैं देख सकूं कि मेरे कान की सोने की बालियों में से एक उनके नीचे तो नहीं चली गयी है (वरना अगर मां को इस बात का पता चल गया तो घंटों मेरे ऊपर चिल्लाएंगी)... और ऐसे ही कई दूसरे काम बॉन्डा बड़े आराम से कर सकता है।



बॉन्डा: *यह तो मैं पहले ही कह चुका हूं, रोबो के आगे इंसान तो किसी काम के नहीं है। एक बार में क़द का बढ़ना रुक जाये, फिर ज़िन्दगी भर उतने पर ही अटके रहते हैं! जबकि हमारे साथ ऐसा नहीं है। हम अपनी मर्ज़ी से, जब चाहें अपने हाथ-पैर लंबे करके या सिकोड़ कर कहीं भी पहुंच सकते हैं। हमारी आंखें कैमरा भी हो सकती हैं, दूरबीन भी, ख़ुर्दबीन भी! या फिर ऐसी, जो इनमें से किसी का भी काम बख़ूबी कर सकें!*





मैंने बॉन्डा को इतने सारे काम करना कैसे सिखाया? उसकी ‘प्रोग्रामिंग’ करके। प्रोग्रामिंग का मतलब है कि हमने उसे सिर्फ़ एक बार बता दिया कि कोई काम कैसे होता है। जैसे, अभी कुछ पहले ही मैंने जिस अलमारी के ऊपर वाले हिस्से से अपना गुप्त ख़ज़ाना मंगवाने की बात की थी, उसे लाना सिखाने के लिए क्या करना पड़ा। मैं बताती हूं, ऐसे-

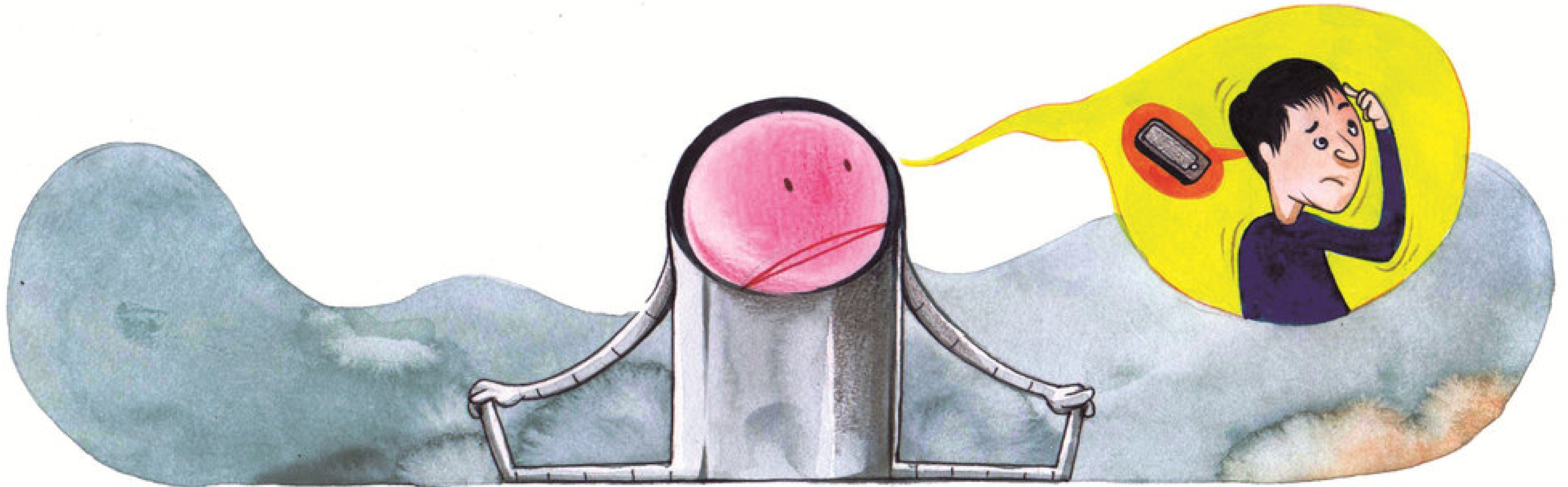
सबसे पहले मैंने बॉन्डा को अलमारी के उस शेल्फ़ का रास्ता बताया जिसमें ख़ज़ाना रखा था। इसके लिए मैंने उसके ‘टच स्क्रीन पैनल’ पर दिखाई दे रहे अपने घर के नक़्शे पर अलमारी तक पहुंचने का रास्ता बना दिया।

जब मेरे बताये रास्ते से वह अलमारी तक पहुंच गया तो मैंने उससे पूछा- "क्या अब तुम ऊपर तक पहुंच कर ख़ुद ही ख़जाने को तलाश सकोगे, बॉन्डा?" उसका हाथ अचानक ऊपर को उठ गया। जब उसका हाथ अलमारी के ऊपरी हिस्से के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गया, उस बीच उसकी उंगली में लगा छोटा सा कैमरा लगातार वहां की तस्वीरें खींच रहा था।

जब बॉन्डा ने अपनी खींची तस्वीरें अपने स्क्रीन पर दिखाईं तो मैंने बस अपने उस डिब्बे पर उंगली रख दी जो मुझे चाहिए था। "बॉन्डा, यही मेरा गुप्त ख़ज़ाने वाला डिब्बा है।" मैंने कहा, "क्या तुम इसे उतार कर मुझे दे सकते हो?"

इसके बाद जब कभी मुझे उस डिब्बे की ज़रूरत हो, मुझे बॉन्डा से बस इतना कहना होता- "गुप्त ख़ज़ाने वाला डिब्बा!" और इतना सुन कर बॉन्डा सीधा जाकर अलमारी से वह डिब्बा उतार कर ला देता। एक बार बॉन्डा कुछ "सीख" ले तो फिर वह उस बात को कभी नहीं भूलता। उसकी याददाश्त ग़ज़ब की है!

बॉन्डा: *ग़ज़ब है?... मेरी याददाश्त इन इंसानों को ग़ज़ब की लगती है क्योंकि ये अपनी चाबियां, चश्मा या फ़ोन कहीं रख कर बार-बार यह भूल जाते हैं!*



हां, मेरा सबसे अच्छा दोस्त बॉन्डा ऐसा ही है। और हां, मैं भी वाकई बहुत ख़ुशनसीब लड़की हूं। अरे, आप मुझे ग़लत मत समझ लेना- मैं कोई अजीब बात नहीं कर रही हूं। इंसानों से, दूसरे बच्चों से भी मेरी दोस्ती है जिनके साथ मैं खेलती हूं, साथ में स्कूल जाती हूं, और कभी-कभी लड़ भी पड़ती हूं। लेकिन बॉन्डा तो मुझे उन लोगों से भी ज़्यादा अच्छा लगाता है क्योंकि जब मैं किसी और के साथ खेलती-कूदती हूं, तो बॉन्डा इस बात का बुरा नहीं मानता। और जब मैं उसे गणित में पछाड़ देती हूं तब उसे मुझसे जलन भी नहीं होती। अगर मैं उसे जन्मदिन पर 'हैप्पी बर्थडे' कहना भूल भी जाऊं तब भी बॉन्डा गुस्से से आगबबूला नहीं होता...

त-त-त! ऐसा इसलिए है क्योंकि बॉन्डा कुछ भी महसूस नहीं कर सकता... भावनाएं नहीं हैं उसके पास! लेकिन यह बात सबके सामने कहने वाली नहीं है... हो सकता है कि यह बात उसे बुरी लग जाए।



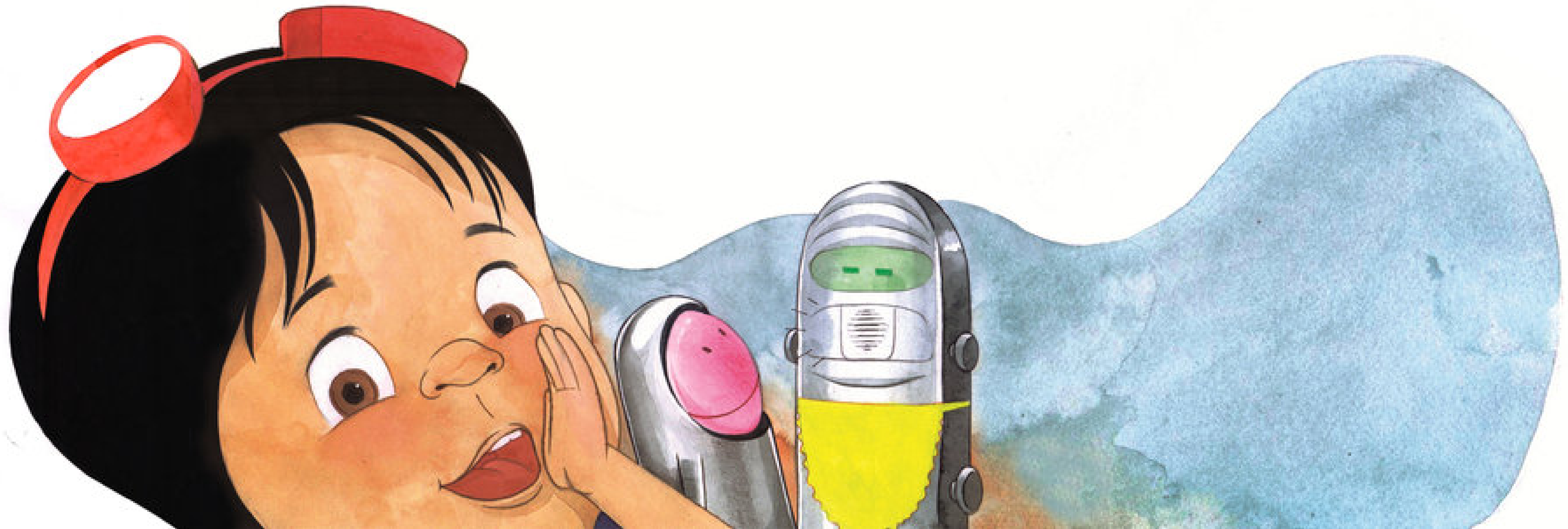
बॉन्डा: *त-त-त! देवी, तुम्हारी सारी समझदारी कहां चली गयी, बच्ची? पहले तुम कहती हो कि मेरे पास भावनाएं नहीं हैं, फिर तुम्हें इस बात की फ़िक्र भी होती है कि मुझे बुरा लग सकता है। इंसान वैसे तो बड़ी समझदारी की बात करते हैं, लेकिन जब वह दुःख, बेचैनी या डर 'महसूस' कर रहे होते हैं, तब उनकी सारी समझदारी न जाने कहां चली जाती है! उफ़, यह महसूस करना ही तो सारी दिक्कतों की जड़ है! मुझे कुछ महसूस नहीं करना!*

ठहरिये! अभी-अभी मैंने जो कुछ 'महसूस' किया, क्या वही 'भावनाएं' तो नहीं? मेरा माइक्रोप्रॉसेसर बता रहा है कि यही भावना है, और जो भावनाएं मैं महसूस कर रहा हूं वह 'हिकारत' की भावना है। लेकिन... मुझे नहीं पता कि इनके बारे में कैसा 'महसूस' करना चाहिए।



वाह! यही तो सबसे अच्छी बात है- मुझे इस बात को लेकर कभी बुरा नहीं लगेगा कि वह मेरे बजाय दूसरे दोस्तों के साथ मज़े कर रहा है, क्योंकि उसके तो कोई दोस्त ही नहीं है!

बॉन्डा: *अरे, जाओ जी जाओ... यह सच नहीं है! मेरे और भी दोस्त हैं! कैफ़ेटेरिया में जो वेटर का काम करने वाली रोबो है वह हमेशा मुझसे बड़े अच्छे से 'हेलो' कहती है। और घर-रसोई में इस्तेमाल होने वाली चीज़ों की दुकान पर चीज़ों को गिनने वाला रोबो भी मेरा अच्छा दोस्त है।ज़रा एक मिनट ठहरिये... देवी जो कुछ कह रही थी, उसका मेरे प्रॉसेसर ने अभी-अभी ख़ुलासा किया है। देवी कह रही थी... वह मुझे सिर्फ़ इसलिए पसंद करती है क्योंकि मेरे और कोई दोस्त नहीं हैं... और भावनाएं नहीं हैं! उसके लिए मेरा वजूद इससे ज़्यादा कुछ नहीं है! अरे नहीं रे! मुझे न जाने कैसा-कैसा महसूस हो रहा है... बौखलाहट सी महसूस हो रही है, दुःख भी हो रहा है, और...*



"बॉन्डा! तुम ठीक तो हो? तुम इतने ज़्यादा गर्म कैसे हो गये, बॉन्डा? अरे तुम तो बुख़ार से तप रहे हो! और तुम्हारा 'ऑटो शटडाउन ' काम नहीं कर रहा है! लेकिन, फ़िक्र मत करना मेरे दोस्त! मैं तुम्हारा भी वैसे ही ध्यान रखूंगी जैसे तुमने हमेशा मेरा ध्यान रखा है। अब मेरी बात ध्यान से सुनो, बॉन्डा- अब मैं तुम्हें 'शट डाउन' करने जा रही हूं ताकि तुम्हारे 'सिस्टम' में आयी गड़बड़ी अपने आप ठीक हो सके। ठीक है न? डरना नहीं... तुम्हें बस ऐसा लगेगा जैसे तुम सोने जा रहे हो, बस। और जब मैं तुम्हें फिर से चलाऊंगी, तब तुम फिर पहले की तरह ठीक हो जाओगे। बिलकुल नये जैसे। और फिर हम दोनों दो सबसे अच्छे दोस्तों की तरह साथ होंगे। तुम सुन रहे हो न मेरी बात?"

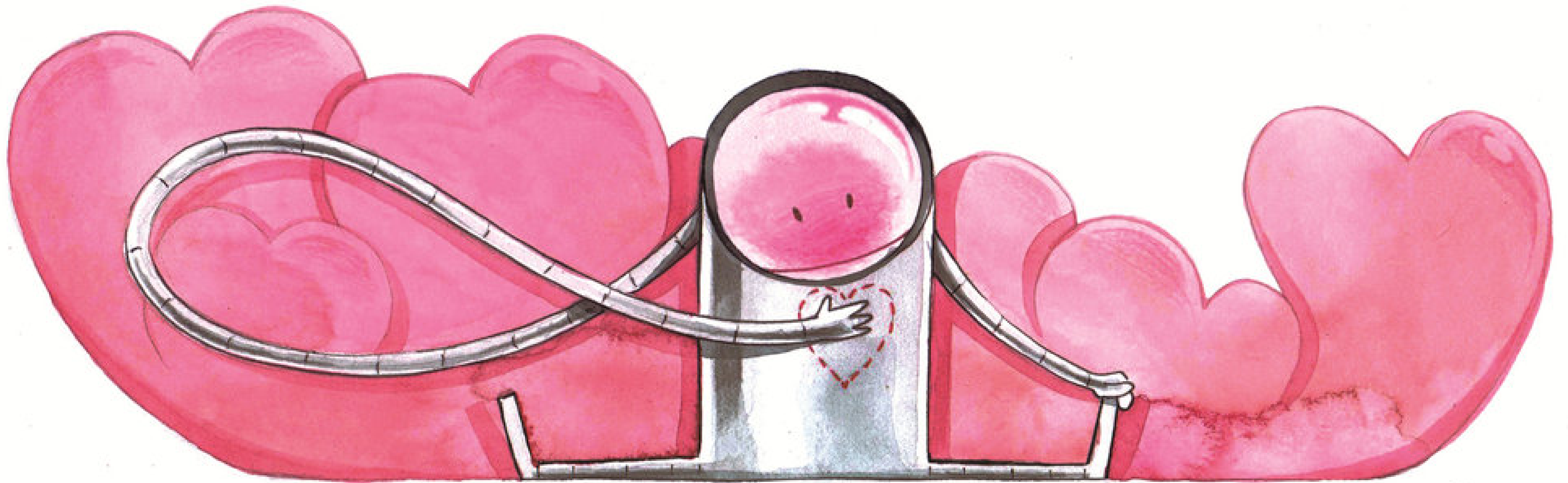
बॉन्डा: *देवी की आंखें गीली हैं। वैसी ही जैसे तब होती हैं जब वह दुःखी होती है, यह सहम जाती है। यह देख कर मुझे भी दुःख जैसा 'महसूस' हो रहा है। लेकिन मेरा प्रॉसेसर बता रहा है कि उसकी आंखों के गीले होने का मतलब यह है कि वह मुझे सचमुच में चाहती है। अब मुझे ख़ुशी 'महसूस' हो रही है... मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि मुझे यह क्या हो रहा है... मैं दुःखी हूं कि ख़ुश हूं... ख़ुश हूं या दुःखी हूं... और लो... मैं शटडाउन....*

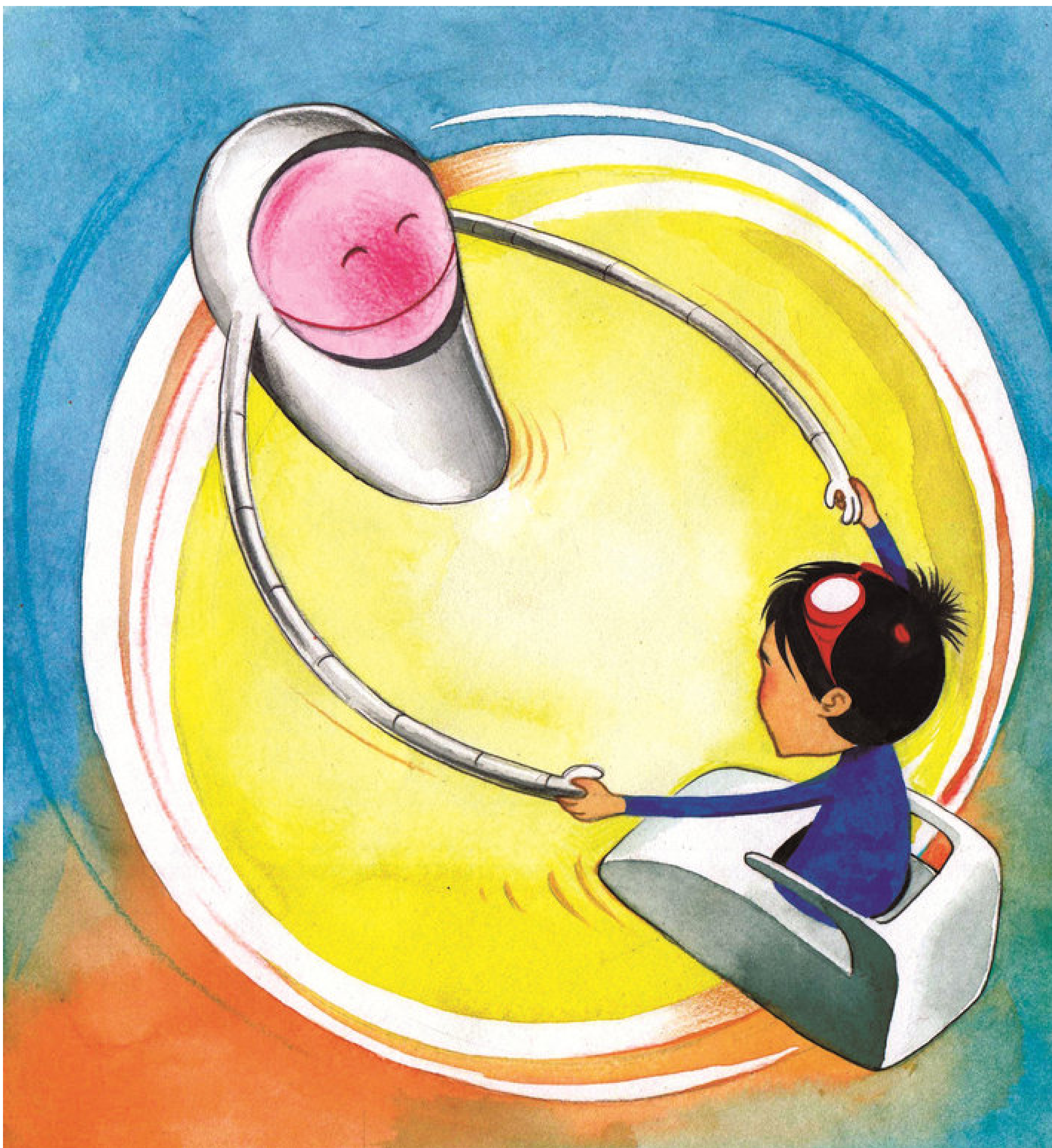




बॉन्डा? बॉन्डा, क्या तुम्हें मेरी आवाज़ सुनाई दे रही है? तुम मुझे पहचानते हो न? मुझे बताओ बॉन्डा कि कहीं तुम्हारी ‘मेमोरी’... तुम्हारी याददाश्त का सफ़ाया तो नहीं हो गया! मैं नहीं चाहती कि तुम भूल जाओ कि हमने पिछले साल कितना मज़ा किया... जो ढेर सारा प्यार हमने एक-दूसरे को दिया..."

बॉन्डा: *अरे, वाह! ‘प्यार।’ कहीं यह वही चीज़ तो नहीं जिसे मैं ‘ख़ुशी और ‘ग़म’ के बीच ‘महसूस’ कर रहा था?*





"हेलो देवी! आज तुम मुझसे क्या करवाना चाहती हो? क्या हम फिर वही डिब्बे लगाने-गिराने वाला खेल खेलेंगे? क्या तुम चाहती हो..."

"बॉन्डा! तुम बिलकुल सही-सलामत हो! उफ़! बता नहीं सकती कितनी राहत मिली मुझे यह जान कर। मैं बहुत ख़ुश हूं, बहुत ख़ुश!"

मैने बॉन्डा को अपनी बाहों में भर लिया।



और तब रोबो बॉन्डा ने बिलकुल ही अजीब सा काम किया। ऐसा, जिसके लिए उसे किसी ने कभी ‘प्रोग्राम’ नहीं किया था।

बॉन्डा: मैने अपनी बाहें फैलायीं और देवी को बाहों में भर लिया। यूं ही। बिना किसी के कहे!

रोबोः कल, आज और कल

क्या सन् 2085 तक देवी जैसे हरेक बच्चे के लिए बॉन्डा जैसा एक दोस्त रोबो होगा? यह तो वक़्त ही बताएगा, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पच्चीस साल बाद आज के मुक़ाबले कहीं अलग तरह की ज़िन्दगी जीने में रोबो हमारा कहीं ज़्यादा हाथ बटाते नज़र आएंगे।

क्या हैं रोबो, आख़िर कौन हैं ये?

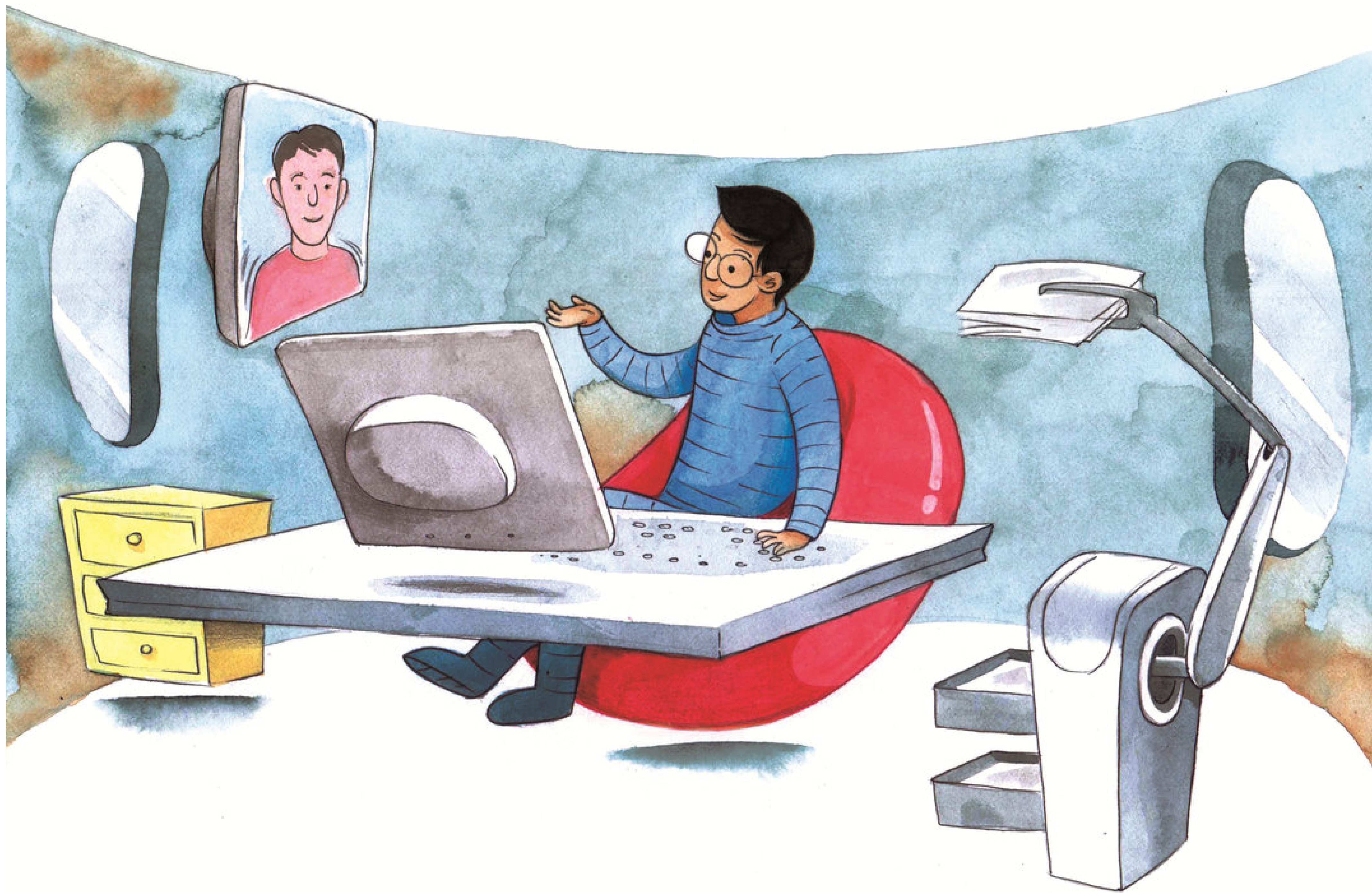
अगर आप यह कहते हैं कि रोबो एक मशीन है जो अपनी बनावट और हरकतों के लिहाज से इंसानों जैसा होता है, सिवाय इसके कि वह झटके से चलता है और उसकी बोली भी सपाट यानी भावविहीन होती है। जब उन्हें चलाया जाता है उनकी आंखें चमकती हैं, तो इसका मतलब यह हुआ कि आप रोबो वाली फिल्में और टीवी शो कुछ ज़्यादा ही देख रहे हैं। क्योंकि वास्तव में रोबो कोई भी बिजली से चलने वाली यांत्रिक व्यवस्था यानी मशीन होती है जिसे कंप्यूटर प्रोग्राम या इलेक्ट्रॉनिक सर्किट के माध्यम से चलाया जाता है। और यह भी कतई ज़रूरी नहीं कि देखने में उसका ढांचा इंसानों जैसा हो! कुछ रोबो ऐसे होते हैं जिनके बड़े-बड़े मशीनी हाथ होते हैं, जिनसे वह बिस्कुट की फैक्ट्री में बिस्कुट के पैकेट बड़े-बड़े डिब्बों में भरते रहते हैं। जबकि कुछ रोबो बहुत ही छोटे कैमरे के समान होते हैं जिन्हें यह जानने के लिए शरीर के अंदर भेजा जाता है कि किसी स्वास्थ्य समस्या की वजह वास्तव में क्या है। कुछ चपटे और गोल वैक्यूम क्लीनर जैसे होते हैं जो फ़र्श की सफ़ाई करते हैं। जबकि कुछ दूसरे रोबो छोटी-छोटी पहिएदार गाड़ियों जैसे होते हैं जो जंग के मैदान में जाकर बारूदी सुरंगों को खोज निकालते हैं और उन्हें निष्क्रिय कर देते हैं।

अरे वाह! यह तो रोबो के बारे में एक अलग तरह का नज़रिया है। इससे तो ऐसा लगता है जैसे रोबो अब भी हमारे चारों ओर हों!

यही सच भी है- रोबो हमारे चारों ओर मौजूद हैं। फ़ैक्ट्रियों में, गोदामों में, बाग़ान में, अस्पतालों में और यहां तक कि घरों में भी। वह देखने में बड़े से मशीनी हाथ जैसे हो सकते हैं जैसे हमें मोटर-गाड़ियों के कारखानों में गाड़ियों की वेल्डिंग करते, पुज़ों को जोड़ते और उन्हें पेंट करते देखने को मिलते हैं। रोबो बालों से बारीक नलियों के सिरे पर लगे बहुत ही छोटे से कैमरे की शक्ल में भी हो सकते हैं जिन्हें मरीज़ की आंतों और धमनी-शिराओं में डाल कर डॉक्टर पता लगाते हैं कि दिक्कत किस जगह है। कुछ रोबो चपटी-गोल तश्तरी जैसे नज़र आते हैं और रात के समय जब सब सो चुके होते हैं, तब घर-दफ़्तर के फ़र्श साफ़ करते हैं। वहीं कुछ छोटी-छोटी पहिए वाली गाड़ियों जैसे दिखाई देते हैं और जंग के मैदान में जाकर ख़तरनाक बारूदी सुरंगों को ढूंढते हैं या फिर चांद या मंगल की सतह पर घूम-घूम कर तस्वीरें लेते हैं और वहां की मिट्टी-पत्थरों के नमूने इकट्ठे करके वैज्ञानिकों के लिए पृथ्वी पर भेजते हैं।

काश मैं ख़ुद भी किसी रोबो को देख पाता!

अगर आपने कभी कंप्यूटर या स्मार्टफ़ोन इस्तेमाल किया है, या देखा है तो इसका मतलब है कि आपने ‘रोबो’ देखा है! हां, इन चीज़ों में भी रोबो मौजूद होते हैं। कुछ के तो नाम भी होते हैं, जैसे सीरी और कार्टाना (क्या आपने इनके बारे में सुना है?) ये रोबो काम की बातें पता लगाने में हमारी मदद करते हैं- चाहे वह स्कूल के प्रॉजेक्ट से जुड़ी जानकारी हो, या फिर यह पता लगाना हो कि किन सड़कों पर आज ज़्यादा भीड़-भाड़ है, दीपिका पादुकोने की नयी फ़िल्म कहां लगी है और उसका अगला शो कितने बजे है. . . रोबो हमारे लिए सिनेमा, बस और ट्रेन के टिकट भी बुक कर सकते हैं।



रोबो का भविष्य कैसा होगा? जहां तक रोबो का सवाल है, सन् 2040 तक दुनिया वास्तव में कैसी होगी?
हो सकता है कि सन् 2040 तक भारत की सड़कों पर रोबो चलते-फिरते न नज़र आयें, लेकिन रोबो हमारे चारों ओर होंगे ज़रूर। खहे हमें उनकी मौजूदगी का पता चले या नहीं। इस बात की पूरी बहुत ज़्यादा संभावना है कि तब तक बिना ड्राइवर की 'रोबो' गाड़ियां हमारी सड़कों पर दौड़ रही हों। हो सकता है हमारी आंखों के कॉन्टैक्ट लेंस में अति सूक्ष्म रोबो मौजूद हों और तस्वीरें खींचने में हमारी मदद कर रहें हो। ऐसे में हमें कैमरा या मोबाइल फ़ोन हाथ में लेकर फ़ोटो खींचने की ज़रूरत नहीं होगी (लेकिन तब हम ख़ुद अपनी फ़ोटो यानी 'सेल्फ़ी' कैसे लेंगे?) छोटे-छोटे हवाई जहाज़ और हेलीकॉप्टर जैसे दिखने वाले 'रोबो' जिन्हें ड्रोन कहा जाता है, वह आने वाले समय में हमें चारों तरफ़ उड़ान भरते नज़र आएंगे। यही 'ड्रोन रोबो' चिट्ठियां-पार्सल, कबाब, पीज़ा जैसे चीज़ें हमारे पास पहुंचाने के काम में लगे होंगे। भले ही 'डिलीवरी-बॉय' का कोई काम ही नहीं रहेगा- लेकिन इससे सड़कों पर भीड़ तो कुछ कम होगी!

और जहां तक सन् 2085 का सवाल है, और 45 सालों बाद, क्या पता तब रोबो क्या धूम मचा रहे होंगें!

Story Attribution:

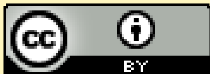
This story: देवी का दोस्त बॉन्डा is translated by Rishi Mathur . The © for this translation lies with Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Bonda and Devi', by Roopa Pai . © Storyweaver, Pratham Books , 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Other Credits:

This book was first published on StoryWeaver, Pratham Books.The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative. This book was created for StoryWeaver, Pratham Books, with the support of Payal Dhar (Guest Editor) and Kaveri Gopalakrishnan (Art Director).

Illustration Attributions:

Cover page: Girl blowing bubbles and a trail of cardboard boxes behind her, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Robot carrying cardboard boxes, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: Smiling girl in a futuristic wheelchair, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: Futuristic cars, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Cars in the near-future, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: Robot with pink face and extended arms, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: Robot with pink face and extended arms, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: robot's extended arm, shelf of boxes, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Robot with extended arm, girl on futuristic wheelchair, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: Robot holding a set of boxes, girl looking confused, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.



ORACLE

The development of this book has been supported by Oracle Giving Initiative.

Illustration Attributions:

Page 11: Robot thinking about forgetful human beings, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: A robot watching two girls play, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A robot watching two girls play, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: Girl whispering, two robots, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: A girl comforting a sad robot, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Worried girl and sad robot, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Robot surrounded with pink hearts, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: Robot and girl holding hands and playing together, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Robot hugging a girl, by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: Man speaking to another man using his computer , by Jit Chowdhury © Storyweaver, Pratham Books, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

देवी का दोस्त बॉन्डा
(Hindi)

क्या ज़रूरी है कि सबसे क़रीबी दोस्त एक जैसे हों? देवी और बॉन्डा एक दूसरे के सबसे पक्के दोस्त हैं। लेकिन, देवी एक छोटी सी बच्ची है, जबकि बॉन्डा... वह बहुत भारी-भारी चीज़ें उठा सकता है, उसके हाथ-पैरों की पहुंच दूर तक है, और उससे जो कुछ कहा जाता है, वह करता है। यह कभी नहीं कहता कि 'भूल गया!' जब चाहें एक बटन दबा कर उसे चला सकते हैं, और जब चाहें बंद कर सकते है! क्या आप सोच सकते हैं कि यहां किसके बारे में बात चल रही है?

यह पठन स्तर ४ की किताब है, उन बच्चों के लिए जो पढ़ने में प्रवीण हैं।

